राज्यपाल सचिवालय

राजभवन, जयपुर

शिक्षित महिलाएं पूरे समाज को गौरवान्वित करती हैं - राज्यपाल

मोदी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में प्रतिभावान छात्राओं को किया सम्मानित

जयपुर/सीकर, 23 जनवरी। राज्यपाल श्री हरिभाऊ बागडे गुरूवार को मोदी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय लक्ष्मणगढ़ के 17वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि रहे। यहां पर उन्होंने विश्वविद्यालय के पासआउट टॉपर विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल एवं मानद डिग्री प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

इस दौरान राज्यपाल श्री बागडे ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि दीक्षांत समारोह सपनों के पूरे होने का उत्सव है तथा यह भविष्य की नई राहों की और अग्रसर होने का भाव है। यहां से विद्यार्थी नए जीवन में प्रवेश करता हैं, जहां हमें राष्ट्र हित के लिए सदैव समर्पित होकर कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि यहां से प्राप्त शिक्षा का उपयोग आप विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने में करेंगे ऐसा मुझे विश्वास हैं।

राज्यपाल श्री बागडे ने मोदी विश्वविद्यालय द्वारा पृथक से दी जा रही बालिका शिक्षा की सराहना करते हुए कहा कि जिस समाज में नारी को जितना सम्मान मिलता है, वह समाज उतनी ही उन्नति करता है। उन्होंने कहा कि शिक्षित महिलाएं पूरे समाज को गौरवान्वित करती हैं। उन्होंने कहा कि जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। शिक्षित महिला एक परिवार को ही नहीं बल्कि पूरी पीढ़ी को शिक्षित करती है। उन्होंने कहा कि हमारे ग्रंथ एवं वेद गणित, विज्ञान और आयुर्वेद की उपलब्धियां से भरे हुए हैं। इस दौरान उन्होंने भारत की प्राचीन नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय द्वारा प्राप्त शोध संबंधी उपलब्धियों की बात कही। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी अपनी बौद्धिक क्षमता से आगे बढ़ता है ना की बहुत सारी डिग्रियां और सर्टिफिकेट प्राप्त कर बढ़ता हैं।

कार्यक्रम में राज्यपाल श्री बागडे ने मोदी विश्वविद्यालय की प्रतिभावान छात्राओं मुस्कान तानिया, भूमिका महेन्द्र शर्मा,स्नेहा रामपुरिया, कुमकुम गुप्ता को गोल्ड मेडल व उपाधी देकर सम्मानित किया।

इससे पूर्व उन्होंने विश्वविद्यालय में ब्रह्मा गुप्ता,नागार्जुन,अग्नी का ध्यान, यज्ञपरिचय, यज्ञ का उद्देश्य, स्मार्तयज्ञ,प्रमुख यज्ञयी पात्र की शिलालेख का अवलोकन कर विश्वविद्यालय द्वारा किये गये इस कार्य की भरपूर सराहना की।

अग्नि का ध्यान
सप्तहस्तश्चतुः शृंगः सप्तजिह्वो द्विशीर्षकः।
त्रिपात्प्रसन्नवदनः सुखासीनः शुचिस्मितः॥
मेषारूढो जटाबद्धो गौरवर्णो महौजसः।
धूम्रध्वजो लोहिताक्षः सप्तार्चिः सर्वकामदः॥
शिखाभिर्दीप्यमानाभिरूर्ध्वगाभिस्तु संयुतः।
स्वाहा तु दक्षिणे पार्श्वे देवी वामे स्वधां तथा।
बिभ्रद्दक्षिणहस्तैस्तु शक्तिमन्नं स्रुचं स्रुवम्।
तोमरं व्यजनं वामे घृतपात्रं च धारयन्॥
आत्माभिमुखमासीन एवंरूपो हुताशनः।
अग्नि के सात हाथ, चार सींग, सात जिह्वाएँ दो सिर और तीन पैर हैं। वे प्रसन्न मुख और मन्दहास्ययुक्त सुखपूर्वक आसन पर विराजमान रहते हैं। वे मेष (भेडा) पर आरूढ़, जटाबद्ध, गौरवर्ण, महातेजस्वी, धूम्र ध्वज, लाल नेत्रवाले, सात ज्वालावाले, सब कामनाओं को पूर्ण करने वाले, देदीप्यमान, ऊर्ध्वगामी ज्वालाओं से युक्त हैं। उनके दक्षिण भाग में स्वाहा और वाम भाग में स्वधादेवी विराजमान हैं और वे अपने दाहिने हाथों में शक्ति, अन्न, स्रुक्, स्रुव, तोमर, पंखा और बाएँ हाथ में घृतपात्र धारण किए हुए हैं। अपने सम्मुख उपस्थित ऐसे रूप वाले अग्नि का ध्यान करना चाहिए।

NAGARJUNA
100 CE

LAKSHMANGARH